"अदान"

एक शांत शाम को, मुंबई शहर का एक छोटी सी गली में एक छोटा मगर खूबसूरत घर। घर के दरवाज़े के सामने कोई था। "कोई है अंदर?" उस लड़के ने कहा। वो एक नौजवान लड़का था, करीब तीस साल का। घर का दरवाज़ा खुला और एक लड़का बाहर आया। उसने पूछा- "कौन हैं जी आप?" लड़के ने जवाब दी, "मैं सिद्धार्थ, तुम परी का भाई हो न? ~~मैं~~ परी मेरी दोस्त थी।" उसने फिर बोला क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?" परी का भाई सिद्धार्थ को अंदर ले गया और बोला- "मैं अभिषेक, आप परी दीदी को कैसे जानते हैं?" सिद्धार्थ ~~उस~~ अभिषेक से आँखे न मिलाई और थोडी तक्लीफ़ के साथ कहा- हम उस अदान में मिले थे। अभिषेक की

आँखें भर गई। अभिषेक ने थोड़े गुस्से से कहा- तुम क्यों आए हो इधर? सिद्धार्थ ने जल्दी हाँथ जोड़ा और नमी आँखों से कहा- परी मेरी भी दोस्त थी, मैं भी उसकी मौत को लेकर दुखी था। पर मेरी बात तो सुनो मुझे कहने दो उस दिन क्या हुआ।

—— 1 महिने पहले ——

~~सिद्धार्थ~~ एक छोटा सा गाँव में, सुबह-सुबह एक लड़के इधर-उधर चलते नज़र आ रहा है। वो सिद्धार्थ था। मगर कुछ सही नहीं थे, सिद्धार्थ के चेहरे में परेशानी के काले बादल भरे थे। सिद्धार्थ ने सोचा- "मुझे तो ~~अब~~ अब तक कोई नौकरी नहीं मिली है मैं घर कैसे चालाऊगा? मैं थक गया हूँ इस ज़िंदगी से।" इसी वक्त उसे एक पत्र मिलता है। उसमें यह लिखा था-"तुम मुंबई खदान के नौकरी के लिए चुने ~~गये~~ हो।"

सिद्धार्थ बहुत खुश हुआ। लेकिन उसकी माँ उसे इस नौकरी करने से रोकने की बहुत कोशिश की क्योंकि इसे काम बहुत खतरनाक होते थे। लेकिन सिद्धार्थ ने अगले दिन अदान जाने की तैयारी की और उसी दिन घर से जाता है। लेकिन उसे क्या पता यह यात्रा उसकी पूरी ज़िंदगी ही पलट देगी। सिद्धार्थ अदान पहुँच गया और बड़े साहब से मिला। वे नौकरी की बात की। सिद्धार्थ अदान देखने के लिए सुरंग के अंदर गया। बाहर आकाश बादलों से भरा था, काले बादलों से। सिद्धार्थ सुरंग से जा रहा था तब उसे एक लड़की मिली। उसने अचानक पूछा - "तुम वही हो न, जिसे मैं रास्ते में मिली थी। लड़की ने जवाब दी - हाँ, तो? सिद्धार्थ फिर पूछा - तुम यहा क्या कर रही हो वो भी अकेले? लड़की ने कहा - "मैं अदान देखने आई हूँ

अचानक बाहर से ~~बिज~~ तेज़ बारिश और बिजली की आवाज़ आई। दोनो बाहर की ओर भागने लगे। मगर तब-तक तेज़ बारिश की वजह से श्मशान की दरवाज़ा मिट्टी से बंद हो गई थी। दोनों काँप रहे थे। डर का साया उनके ऊपर छा गई। वे यहाँ फसे थे। न जाने कब यहाँ से बच पाँएगे। सिद्धार्थ अपनी परिवार की पती था। अगर वो यहाँ से बच नहीं पाँएगे तो उसका परिवार का क्या? ये सारी बातें उसके दिमाग में घूम रही थी।

सिद्धार्थ ने लड़की की ओर देखा। वो भरी परेशान थी। सिद्धार्थ ने उसे पूछा "नाम क्या है तुम्हारी?" उसने जवाब दी "परी, परी शर्मा।" दोनों बातें करने लगे। इस बातचीत के द्वारा वे एक दूसरे को ~~कम~~ काफ़ी समझने गए। परी एक अमीर घर की लड़की थी, उसकी माँ-बाँप नहीं थे। बस एक भाई था, वहीं ही उसका पूरा परिवार

था। परि एक पत्रिका थी। परी को सिद्धार्थ के बारे बहुत कुछ पता लगा। ~~वह~~ ~~सिर~~ परी को सिद्धार्थ की मदद करनी चाहती थी। दोनों कुछ ही वक्त में अच्छे दोस्त बने। एक दिन बीत गया। ~~खा~~ खाना खत्म हो रही थी। दोनों के जीवन भगवान के हाथों थे।

पारी ने अपना खाना भी सिद्धार्थ दी। उनके जिवन उस खदान के अंधेरे दीवारों की तरह काला पडने लगे। लेकिन एक दिन खदान के दरवाज़े में कुछ हल-चल महसूस हुई। सुरक्षा संख खदान के दरवाज़े से मिट्टी को हटा रहे थे। ज़ोर-जोर से उस मिट्टी पर मारा। धीरे-धीरे मिट्टी रस्ते से हटने लगी। यह सब देखर परी और सिद्धार्थ के मन में खुशियों की दीप जली। लेकिन कठिनाई तो अब आने वाली थी। दरवाज़े पर जैसे मिट्टी हट रही थी वैसे ही दिवारों से मिट्टी गिर रही थी।

62 nd Kerala School Kalolsavam, January 4 to 8, 2024, Kollam

Item Code: 642 Participant Code: 118

पूरा सुरंग हिल रहा था। सिद्धार्थ और परी ऊपर भी ~~बड़े~~ बड़े-बड़े चट्टान गिरने लगे। दोनो जीवित रहकर मौत की सामना कर रहे थे। ~~सु~~ सुरंग का दरवाज़ा खुलने लगा। दोनों अपनी जान लेकर भाग रहे थे। लेकिन तब एक बड़ा सा पत्थर ~~अ~~ परी के ऊपर गिरा। परी खून में पड़ी थी। सिद्धार्थ ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाया। परी थकी भी थी। तब परी ने आखरी साँस लेकर बोली- "भाई का ख्याल रखना।" ~~तब~~ कुछ ~~सब~~ लोग आये और सिद्धार्थ को वहाँ से ले गया। सब बहुत जल्दी हुआ। सिद्धार्थ के आँखों से आँसू ही आँसू बह रहे थे। उस दिन सिद्धार्थ को सबने बचा ली और बड़े साहब ने सिद्धार्थ को एक बड़ी नौकरी भी दिया।

अब

"उस दिन मैं तो बच गया मगर मेरा दिल वहा ही मर गया। मेरी जान बचाने

वो दोस्त वहीं मर गयी।" सिद्धार्थ रोते हुए कहा। मेरी ज़िंदगी उसकी दिया हुआ है अगर उस दिन उसने मुझे खाना और पानी न दी थी तो मैं मर जाता। और वो जीवित रहती। उसने मरते वक्त भी अपने भाई के बारे में सोच रही थी। ~~अब~~ मैं आज तुम्हें मेरे संग ले जाने आया हूँ। अगर मैं परी के लिए इतना भी न करूं तो भगवान मुझसे माफ नहीं करेगा।" यह सब सुनकर अभिषेक भी मान गया। सिद्धार्थ के जीवन में उस लड़की जिसे वो रस्ते में मिला था उसने सिद्धार्थ को एक नई जीवन दी। सिद्धार्थ मरना चाहता था, और परी जीना चाहती थी। लेकिन अब परी सिद्धार्थ के लिए ~~मरी~~ मरी और सिद्धार्थ परी के लिए जीने लगा। रास्ते में मिली लड़की उसके जीवन में भगवान ने भेजी एक असल परी ही थी, एक करिश्मा.....